देवकान्त झा

जन्म	–	1936 ई0
जन्म स्थान	–	चतरा, मधुबनी
वृत्ति	–	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-संस्कृत विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, मैथिली अकादेमी, पटना, निदेशक सह सचिव –1987–89 ई0, पटना। साहित्य अकादेमी, दिल्लीक एडवाइजरी कमिटीक सदस्य (मैथिली) 1993–1997 ई0।
कृति	–	विभिन्न पत्र–पत्रिकामे कथा, कविता, निबंध ओ समीक्षा मूलक रचना प्रकाशित, मैथिली दस रूपक, कथा कल्प (मैथिलीमे) महाकवि कालिदास आओर भवभूतिक आलोचनात्मक अध्ययन हिन्दीमे, ए हिस्ट्री ऑफ मोडर्न मैथिली लिटरेचर अंग्रेजीमे।
पुरस्कार	–	नलिन विलोचन शर्मा पुरस्कारसँ पुरस्कृत–1988–89 ई0।

□□□

मिथिलाक रंग ओ शिल्प

कला मानव-जीवनक जीवित दस्तावेज थिक। कोनो देशक सभ्यता-संस्कृतिक आत्मा ओकर कलाकृतिएमे प्रतिध्वनित होइत अछि। कला द्विविध होइछ-ललित कला ओ उपयोगी कला। ललित कला पाँच वर्गक अछि-स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत ओ काव्य। कलाक कुल चौंसठि भेदमे सँ ललित कला सर्वोपरि थिक। ललित कलाक संवर्गमे साहित्य आओर संगीतक पश्चात् दोसर नम्बरपर मूर्ति ओ चित्रेक स्थान अछि। चित्र जीवनक मूक कविता थिक आ कविता जिनगीक बजैत चित्र। नाटकमे ओ चित्र बजबे नहि, चलबो-फिरबो करैत अछि। तेँ नाटककेँ कवित्वक चरमसीमा कहल गेल अछि-नाटकान्तं कवित्वम्। साहित्य आ संगीतसँ रहित व्यक्ति जड़मति थिक। महाकवि भर्तृहरिक दृष्टिमे साहित्य, संगीत आ कलासँ शून्य मनुक्ख एहन आँखिदेखार पशु थिक, जकरा खाली नाङरि आ सींगटा नहि रहैत छैक। पशुक अहोभाग्य जे मानव घास नहि खाइत अछि, ने तँ पशुकेँ घास कहाँसँ भेटितैक-''साहित्य सङ्गीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः''। जिनगी जीवाक एक कला थिक। कला-जगत् जिनगीकेँ सरस, सुखद ओ आनन्दप्रद बनबैत अछि। कलाक-संसारक सर्वस्व थिक मनुष्य-दुःख दैन्य, अभाव आ पीड़ासँ लड़ैत यैह हाड़-काठक मनुक्ख जकरा प्रकृति आ परमेश्वरसँ जोड़ि कलाकार आनन्दक अमृत पिया देबाक लेल अपस्याँत रहैत अछि। तेँ कलाक दुनियाक केन्द्र आ परिधि मनुष्ये आ मानव-जीवन थिक। कला जीवनक सहज अनुकृति थिक, ओकर सजीव चित्रांकन आ विशिष्ट रागात्मक अभिव्यञ्जना थिक। ओकर पुनर्प्रस्तुति आ पुनर्निर्माण थिक। तेँ कोनो समाज वा राष्ट्रक सहज प्राणधारा आ जीवन-शैली एतय देखल जा सकैए। कोनो देशक कलाकृतिकेँ देखि ओहि देशकेँ सहजहि चिन्हल-परेखल जा सकैए। मिथिलाक शिल्प ओ चित्रक संसार मिथिलाक कथा कहैत अछि। मिथिलाक चित्रशैली मिथिलाक वास्तविक जीवन-शैली थिक। ई सप्राण कलाकृति मिथिलाक स्पन्दनशील जन-जीवनक मूक कविता थिक। एहिमे जे देश-कोशक राग-रंग आ माटि-पानिक मह-महाइत सौरभ अछि सएह हमर परिचय थिक।

मिथिला भारतक सांस्कृतिक आत्मा थिक। युग-युगसँ ई धर्म, दर्शन ओ अध्यात्मक त्रिवेणी रहल अछि। ई सनातनिसँ संस्कृत विद्याक गढ़ रहल अछि। भारतीय संस्कृतिक शुद्ध स्वरूप एतय सुरक्षित रहल अछि। कोनो मिश्रण वा प्रदूषणक शिकार मिथिला कहियो ने रहल। तेँ एकर सुच्चा रूप एतुका कलाकृतिमे देखल जा सकैए। परम्परा आ संस्कृतिक मधुरतम सामंजस्य मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकलामे द्रष्टव्य थिक। ललितकला कोनो देशक सांस्कृतिक सम्पदाक सनातन धरोहरि थिक। बीसम शताब्दीक छठम-सातम दशक मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकलाक इतिहासक स्वर्ण-युग रहल अछि जखन एकरा सर्वप्रथम व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय मञ्च भेटलैक। सौंसे संसारमे ई क्रांति मचा देलक। मिथिलाक महान सपूत स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र आ स्वनामधन्य मिथिलाक वरद पुत्र उपेन्द्र महारथीक योगदान एहि क्षेत्रमे अविस्मरणीय अछि। महान कलामर्मज्ञ डब्ल्यू.जी. आर्चर 'मैथिली चित्रकला' (Maithili Painting)' नामक पोथी लिखि पहिले-पहिल एहि कलाकेँ सार्वभौम मान्यता दियौलनि। पुनः 1982 ई.मे 'मधुबनी पेंटिंग आ 1987 इसवीमे मैथिलीमे 'मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला' लिखि स्व. डा. उपेन्द्र ठाकुर एहि

क्षेत्रमे उल्लेखनीय काज कयल। जन्मजात अन्वेषक आ कलामर्मज्ञ स्वर्गीय कुलकर्णी एहि कलाक प्रति अपन सम्पूर्ण जीवन समर्पित कय देलनि। महाराष्ट्री रहितो ओ मिथिलाक अनुपम रत्न छलाह। सुप्रसिद्ध राजनेता ललित बाबूक संरक्षण, फ्रांसीसी महिला ग्रए मेकुआदक कलाप्रेम, महान् पुपुन जयकर, राजीव सेठी, जगदीशचन्द्र माथुर आदिक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जायत जनिक अथक प्रयासेँ मिथिलांचल आइ संसारक कलाकृति मंचपर प्रतिष्ठापित अछि। सरिपों धर्म-दर्शन आ अध्यात्मे नहि, मिथिला साहित्य-संगीत ओ कलाक पावन त्रिवेणीधाम रहल अछि।

'स्वान्त: सुखाय' अथवा 'कला कलाक लेल' (Art for art' Sake) तँ कलाकारक परम सुखधाम थिके; मुदा मिथिलाक शिल्पकलामे जीवनक यथार्थ प्रतिबिम्बन, आनन्द ओ विनोदक अतिरिक्त सेवा-समर्पण एवं आर्थिक उपयोगिताक सृजनक भाव सेहो निहित अछि। अर्थशास्त्रक शब्दावलीमे यदि उत्पादन उपयोगिताक सृजन थिक तँ मैथिल चित्रशिल्प एक सहज-सुन्दर निदर्शन-प्रदर्शन। गृह उद्योग रूपमे विकसित आइ ई कृषिक क्षेत्रमे पसरल बेकारीक समस्याक यथेष्ट समाधान प्रस्तुत कय सकैत अछि। संगहि दलाली-दादागिरी ओ माइनजन-मझौलियाक शोषणक चक्की तरसँ निकालि मिथिलाक माटि पानिपर जमल कलाकेँ समुचित प्रोत्साहन आ बाजार भेटलैक तँ संरक्षणक अन्तर्गत ई हमर विदेशी मुद्राक अभिवृद्धिमे समर्थ योगदान कय सकैत अछि। मिथिलाक आजुक जीवित संदर्भमे शिल्पकला ओ चित्रकलाक महत्त्व राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिजपर सर्वाधिक अछि। यदि लोक जागरूक रहि अपन एहि प्राचीन सम्पदाकेँ जोगाकेँ राखय तँ मिथिला गृह उद्योग आ वैश्विक पर्यटन केन्द्रक रूपमे विकसित कयल जा सकैए।

आधुनिक चित्रकलाक संसारमे मिथिला चित्रकलाक धूम मचल अछि। फैशनक दुनियामे सेहो एकर बाजार गरम अछि। कीमती-सँ-कीमती साड़ीक शोभामे आइ मिथिलाक अरिपन चारि चान लगा रहल अछि। संसारक कपड़ाक वेशकीमती डिजाइनमे मिथिलाक चित्रकलाक चमत्कार देखिते बनैछ। जे विशेष पावनि-तिहार व पूजा-अर्चामे पहिने मिथिलाक घर-आंगनक सिंगार छल से आइ संसारक शोभा अछि। अजन्ताक सप्राण चित्र ओ एलोराक बजैत मूर्ति जहिना विश्वक तीर्थयात्रीकेँ अभिभूत करैत आयल तहिना मिथिलाक घर-आंगन, देवाल, तुलसी चौड़ा, कोहबर वा कोबराक घर आदिमे हाथसँ बनाओल गेल चित्र, माटिक भाँति-भाँतिक मूर्ति, सूइ-डोराक राशि-राशिक चमत्कार, सिकी-पौतीक अपूर्व कलाकारिता आदि देशी-विदेशी पर्यटकक ध्यान आकृष्ट कए रहल अछि। विभिन्न पावनि-तिहार, अनेको संस्कार (बिआह, उपनयन, मुण्डन आदि), देवी-देवताक पूजा अर्चना, गोसाउनिक घरसँ सलहेसक मन्दिर धरि ओ कुम्हारक चाकसँ डोम-डोमनिक पथिया-मौनी आ सूप-चालनि धरि एकर व्यापकता देखल जा सकैए। ओना मिथिलांचलक कर्ण कायस्थ ओ ब्राह्मण वर्णमे मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला विशेष रूपसँ सुरक्षित रहल अछि। आजुक संसारक नीक-सँ-नीक होटल-रेस्तराँ, सामुद्रिक बन्दरगाह, शिक्षण संस्था, विश्वविद्यालय, बाबू-भैयाक ड्राइंग रूम, रेलक डिब्बा, प्लैटफॉरम, टीशन आदिपर मिथिलाक एहि कलाकृतिकेँ देखि हमरालोकनि सहसा आनन्दमुग्ध भय जाइत छी। मिथिलाक विशिष्ट चित्र ऐपन वा अरिपनमे तन्त्र-मन्त्रक चमत्कार ओ रहस्यवादी दार्शनिक ऊहापोहक शैली सेहो सन्निहित अछि। कतेको मैथिलानी आइ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारसँ

बहुश: सम्मानित भय चुकली अछि। पद्‌मश्रीसँ पुरस्कृत जगदम्बा देवी, आ गंगा देवी तथा राष्ट्रपति एवं अन्यान्य पुरस्कारसँ पुरस्कृत महासुन्दरी देवी, सीता देवी, गोदावरी देवी, चन्द्रकला देवी, यमुना देवी, बाना देवी आदि नाम स्वर्णाक्षरमे उल्लेखनीय थिक। आजुक मिथिलाकेँ तेँ मर्यादा अपन एहि गृहकलासँ भेटलैक अछि से युग-युगधरि हमरालोकनिकेँ गौरवान्वित करैत रहत। सरिपों ई लोकनि मिथिलाक पिकासो थिकीह। एहन अपन स्त्रीरत्नसँ मिथिला आइ धन्य अछि।

जैं मधुबनी राँटी, रसीदपुर, जितबारपुर, भवानीपुर, हरिनगर, लहेरीगंज आदि चारूकातक क्षेत्र एहि कलाक प्रमुख प्रसवभूमि रहल अछि तेँ ई मधुबनी चित्रकलाक (Madhubani Paintings) नामसँ जानल जाइत अछि। आइ एहि कलाकेँ संसारक ततेकने प्रशस्तिक फुलडाली भेटलैक अछि जे विश्वक मानचित्र पर मधुबनी सदा-सर्वदाक लेल अमर बनि गेल। एहि चित्रकलाक तीन भाग अछि-भित्तिचित्र (Wall Paintings), पटचित्र (Canvas Paintings) ओ भूमिचित्र (Floor Drowings)। मिथिलामे भित्तिचित्र आ भूमिचित्रक प्राधान्य अछि। पीढ़ी-दर-पीढ़ीसँ परम्परागतरूपसँ मैथिल ललना एकरा जोगओने छथि। कोबराक घर एहि कलाक सबसँ पैघ आकर्षण थिक। कोहबर वा कोबर लिखबामे मैथिलानीक भावप्रवणता, अनुभूतिमयता आ कल्पनाशीलता देखितै बनैछ। प्रेम, सौन्दर्य ओ आनन्दमय उल्लासक ई रंग ओ शिल्प अपूर्व अछि। भूमिचित्र, भूमिशोभा व अरिपनमे मिथिलाक तन्त्र-मन्त्रक बहुविध आयाम, रहस्यमयता, धार्मिक प्रतीकात्मकता, देवी-देवताक उपासना-प्रक्रिया आदिक चमत्कार अछि। चकमक चाउरक पिठार आ रंगीन भस्म, सिन्दूर आदिसँ मैथिल ललनाक आङुरक ई कौशल अपूर्व अछि। मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक ई परम्परा बहुत अर्थगर्भित ओ महिमामण्डित अछि। मृण्मूर्ति (माटिक मुरुत), गुड़िया (कनिञा-पुतड़ा) श्यामा-चकेबा आदि एकर व्यावहारिक रूप थिक। व्यावहारिक आ उपयोगी कलाक रूपमे सिकी, बाँस, सूत, काठ, मूँज, मोथा, लाह, टकुरी,-चरखा आदिक रूप मिथिलामे बहुत विकसित अछि। गृह-उद्योगक रूपमे यथोचित संरक्षण पोषण भेने कृषि-क्षेत्रमे पसरल बेकारीक भूतकेँ ई आसानीसँ भगा सकैए। बिचौलिया जे चानी कटैत अछि तकरा सरकारी प्रयाससँ दूर कयल जा सकैए।

दरबारी संस्कृतिसँ भिन्न जनजीवनक प्रतिनिधि मिथिलाक ई लोक-कला वा गृह-कला अमर थिक। मिथिलाक सामाजिक, धार्मिक आ सांस्कृतिक सम्पदाक एहि सनातन धरोहरिकेँ जाहि निष्ठा आ समर्पणक संग मिथिलाक अशिक्षित वा अर्धशिक्षित महिलागण बिना कोनो शिक्षण-प्रशिक्षणकेँ युग-युगसँ संजोगने रहलीह अछि। तकर जतेक बड़ाई कयल जाय, थोड़ थिक। रंग ओ शिल्प, कूची ओ कलम, शास्त्र ओ साहित्य, धर्म ओ दर्शन, तन्त्र ओ मन्त्र, रेखा ओ वर्ण-विलास, प्रकृति ओ परमेश्वर तथा कोबराक घरसँ गोसाउनिक मन्दिरधरि पसरल मधुबनी चित्रकला आइ ग्रह नक्षत्र जकाँ भूमण्डलक कण्ठहार अछि। जाधरि मैथिल संस्कृति जीवित रहत ताधरि एहि चारूचन्द्रक चन्द्रकलासँ नटनागरक ई संसार जगमग रहत। राष्ट्रीय अस्मिताक आधार, विश्वामित्रक सिंगार, गौरवक आगार, ओ विदेशी मुद्राक भण्डार मिथिलाक ई रंग-शिल्पक संसार युग-युग जीवओ आ जन-मानसकेँ जुड़ाबओ।

शब्दार्थ

द्विविध-दू प्रकारक

मूक-बौक

अपस्यांत-बेचैन, बेहाल

सनातनि-शाश्वत जे सबदिन रहय

दैन्य-दीनता, गरीबी

कलामर्मज्ञ-कला जननिहार

जन्मजात-जन्मसँ

कण्ठहार-गरदनिक हार

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

(i) साहित्य-संगीत कलासँ रहित के थिक?

(क) दमवता (ख) दनुज (ग) मानव (घ) पशु

(ii)कोन मैथिल ललना पद्मश्री पौलनि?

(क) सुनयना (ख) शोभना (ग) मीनाक्षी (घ) जगदम्बा

(iii) मैथिलीक पोथी 'मिथिलाक शिल्पकला ओ चित्रकला' के लिखलनि :

(क) भास्कर कुलकर्णी (ख) राधाकृष्ण चौधरी (ग) उपेन्द्र ठाकुर (घ) पुपुल जयकर

(iv) डब्ल्यू॰ जी॰ आर्चरक पोथी कोन थिक?

(क) मधुबनी पेन्टिंग (ख) मैथिल पेन्टिंग (ग) मिथिला पेन्टिंग (घ) तिरहुत आर्ट्स

(v) ललित कलाक कतेक भेद अछि?

(क) तीन (ख) पाँच (ग) सात (घ) नौ

(vi) 'स्वान्तःसुखाय' केर अर्थ थिक?

(क) स्वार्थ-साधन (ख) परार्थ-सिद्धि (ग) अपन हृदयक सुख लेल (घ) लोक-कल्याण लेल

2. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) डॉ॰ उपेन्द्र ठाकुरक कोन रचना अछि?

(ii) जगदम्बा देवी कोन तरहेँ ख्यात छथि?

(iii) कोहबर आ गोसाउनिकघरक अन्तर चारि वाक्य लिखू।

(iv) भूमि चित्र कोन अवसर पर लिखल जाइछ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) 'मिथिलाक रंग ओ शिल्प' निबन्धक सारांश लिखू?

(ii) मिथिलाक शिल्प ओ कलाक की विशेषता अछि? बुझा कऽ लिखू।

(iii) "मिथिला कला-कौशलक गढ़ थिक-" कोना? स्पष्ट करू।

(iv) मधुबनी पेंटिंगक प्रचार-प्रसारक लेले ललित बाबूक भूमिका लिखू।

4. भाषा-अध्ययन

(i)वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करू :

पिठार, नाङरि, सौंसे, आँखिदेखार, ऐपन, संजोगब, मह-मही, जाधरि-ताधरि, साक्षात् ।

(ii)अर्थ-भेद देखाउ :

राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय; सदा-सर्वदा; शिक्षण-प्रशिक्षण; निर्माण-पुनर्निमाण; प्रस्तुति-पुनर्प्रस्तुति; मूक-वाचाल, गाम-घर।

(iii)अधोलिखित सहचर शब्दक वाक्यमे-प्रयोग करू :

देश-कोश, माटि-पानि, घर-आङन, हाड़-काठ, दुःख-दैन्य, राग-रंग, पावनि-तिहार, पूजा-अर्चा।

(iv)निम्नलिखित शब्दक विशेषण बनाउ :

विश्व, जीवन, सुरभि, राष्ट्र, महत्, धर्म, समाज।

(v)वाक्यमे प्रयोग करू :

धूम मचब, चानी काटब, बेकारीक भूत भगायब, जोगाकेँ राखब।

□□□